

कक्षा-8 पाठ-14
विषय-हिंदी
लेखक-अन्नपूर्णानन्द वर्मा

अकबरी लोटा



अन्नपूर्णानन्द काशी
जन्म-21 सितम्बर, 1895
मृत्यु-4 दिसम्बर, 1962

अन्नपूर्णानन्द काशी हिन्दी में शिष्ट हास्य लिखने वाले कलाकारों में अग्रणी थे। अन्नपूर्णानन्द काशी, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। आपकी पढ़ाई उत्तर प्रदेश के गाजीपुर के एक छोटे स्कूल से आरंभ हुई उन्होंने अधिकांश कहानियों में काशी नगर के वातावरण को मूर्तिमान किया है। लेखक स्वयं बराबर काशी में ही रहे। कुछ दिनों तक अपने बड़े भाई सम्पूर्णानन्द , जो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, के साथ लखनऊ में भी रहे।

ये 22 वर्ष की आयु में साहित्य के क्षेत्र में आए, और इनका पहला निबंध-‘खोपड़ी’ प्रसिद्ध हास्यपत्र ‘मतवाला’ में प्रकाशित हुआ। उन्होंने प्रमुखतः कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें हास्य की योजना भाषा के स्तर और परिस्थितियों की विडम्बना पर आधारित है। इन्होंने हिंदी के शिष्ट हास्य रस के साहित्य को ऊँचा उठाया। अन्नपूर्णानन्द लिखते बहुत कम थे, पर जो कुछ लिखा वह समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए और किसी के प्रति द्वेष न रखकर समाज को जगाने के लिए लिखा।

उनका हास्य कोरे विदूषकत्व से भिन्न कोटि का था।
अन्नपूर्णानन्द की निम्न रचनाएँ प्रकाशित हुई थीं -
'मनमयूर', 'मेरी हजामत', 'मंगलमोद', 'मगन रहु चोला',
'महाकवि चच्चा'।

'पं. विलासी मिश्र' अन्नपूर्णानन्द ने पंडित मोतीलाल नेहरू
के पत्र 'इंडिपेंडेंट' में कुछ समय श्री प्रकाश के साथ काम
किया। अन्नपूर्णानन्द दानवीर शिवप्रसाद गुप्त के निजी
सचिव थे। गुप्तजी के साथ ही आपने संसार भ्रमण भी
किया था।

पाठ का सार

अन्नपूर्णानन्द की कहानी “अकबरी लोटा” एक हास्य पूर्ण कहानी है। लेखक ने कहानी को बहुत ही रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है और साथ के साथ बताया गया है कि परेशानी के समय में परेशान न होकर समझदारी से किस तरह से एक समस्या का हल निकाला जा सकता है और दूसरी बात इस कहानी में यह भी बताया गया है कि एक सच्चा मित्र ही मित्र के काम आता है और उसके लिए बहुत कुछ कर गुजर जाता है।

कहानी के माध्यम से लेखक हमें सीख देना चाहता है कि सही वक़्त पर सही समझ का उपयोग करना कितना जरूरी है। इस कहानी के मुख्य पात्र हैं-लाला झाऊलाल और उनके मित्र पंडित बिलवासी मिश्र जी।



कठिन शब्दों के अर्थ

ठठेरी बाज़ार - वह बाज़ार जहा बर्तन खरीदे तथा बेचे जाते हैं।

नख-शिख से - सिर से पाँव तक पूरी तरह।

असमर्थ - कोई काम करने की स्थिति में न होना।

डेंजरस ल्यूनाटिक - खतरनाक पागल।

खुरा.फाती - शरारती दिमागवाला।

बेढंगी - कुरूप या अच्छी बनावटवाला न होना।

मुँडेर - छत का बाहर की ओर निकला हिस्सा।

उल्का - टूटा हुआ आकाशीय पिंड।

- सनसनाया - घबराया
- तात्पर्य - मतलब, अर्थ।
- रोब से - प्रभावपूर्वक।
- डींग - बड़ी-बड़ी बात
- सायबान - छज्जा
- प्रकांड - बहुत बड़ा
- क्रिमिनल - अपराधी।
- खुक्ख - खाली हाथ।

- गढन - बनावट।
- अदब - इज़्जतमान, सम्मान।
- गनीमत - अच्छा है, शुक्र है।
- चूँ करना - कुछ कहना।
- निरीह - कमज़ोर, बेचारा।
- खुरा.फाती – शरारती
दिमागवाला।
- मॉडल – प्रतिरूप

- रोब – अकड़
- प्रतिष्ठा – इज्जत
- गाथाएँ – कहानियाँ
- दुम – पूँछ
- हेंकड़ी – अकड़
- उधेड़-बुन – फिक्र
- वजू – पूजा करने का तरीका
- म्यूजियम – अजायब घर

- प्रकट – उपस्थित
- बेढ़ंगी – बेकार
- वेग – गति
- ओझल – गायब
- ईजाद – खोज
- निरीह – बेचारा
- विज्ञ – ज्ञानी
- सुशिक्षित – पढ़ा-लिखा

પ્રશ્ન અભ્યાસ

प्रश्न-1. “लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे।” लाला झाऊलाल को बेढंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया। आपके विचार से वे चुप क्यों रहे? अपने विचार लिखिए।

उत्तर 1. लाला झाऊलाल को बेढंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया क्योंकि वे अपनी पत्नी का अदब मानते थे। दूसरा वे पत्नी के तेज-तर्रार स्वभाव से भी अवगत थे उन्होंने सोचा कि अभी तो लोटे में पानी मिला है यदि चूँ कर दू तो कहीं बाल्टी में भोजन ना करना पड़े।



प्रश्न-2. लाला झाऊलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।” आपके विचार से लाला झाऊलाल ने कौन-कौन सी बातें समझ ली होंगी?

उत्तर- दो और दो जोड़कर स्थिति को समझना अर्थात् परिस्थिति को भाँप जाना। लोटा गिरने पर गली में मचे शोर को सुनकर आँगन में एकत्र हो गई। एक अंग्रेज को भीगे हुए तथा पैर सहलाते हुए देखकर लाला समझ गए कि स्थिति गंभीर है और लोटा अंग्रेज को लगा है। इस समय उनका चुप रहना ही ठीक है।

प्रश्न-3. अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने तक से क्यों इनकार कर दिया था? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 3. अंग्रेज़ के सामने बिलवासीजी ने झाऊलाल को पहचानने से इनकार कर दिया क्योंकि अंग्रेज़ का क्रोध शांत हो जाए और अंग्रेज़ को ज़रा भी संदेह न हो कि वह लाला झाऊलाल का आदमी है। तथा वह अपनी योजना पूरी करना चाहते थे जिससे पैसे की व्यवस्था हो सकें।

प्रश्न- 4. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था? लिखिए।

उत्तर- बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपने ही घर से अपनी पत्नी के संदूक से चोरी कर किया था।



प्रश्न-5 . आपके विचार से अंग्रेज ने यह पुराना लोटा क्यों खरीद लिया? आपस में चर्चा करके वास्तविक कारण की खोज कीजिए और लिखिए।

उत्तर 5. अंग्रेज को पुरानी ऐतिहासिक चीजें इकट्ठा करने का शौक था। ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि दुकान से पुरानी पीतल की मूर्तियाँ खरीद रहा था। अंग्रेज ने बिलवासी के कहने पर लोटा, अकबरी लोटा समझकर 500 रूपए में खरीदा।



भाषा की बात

प्रश्न-1. इस कहानी में लेखक ने जगह-जगह पर सीधी-सी बात कहने के बदले रोचक मुहावरों, उदाहरणों आदि के द्वारा कहकर अपनी बात को और अधिक मजेदार/रोचक बना दिया है। कहानी से वे वाक्य चुनकर लिखिए जो आपको सबसे अधिक मजेदार लगे।

- उत्तर-1. अब तक बिलवासी जी को वे अपनी आँखो से खा चुके होते।
2. कुछ ऐसी गढ़न उस लोटे की थी कि उसका बाप डमरू, माँ चिलम रही हो।
3. ढाई सौ रूपए तो एक साथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते हैं।

प्रश्न-2. इस कहानी में लेखक ने अनेक मुहावरों का प्रयोग किया है। कहानी में से पाँच मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग करते हुए वाक्य लिखिए।

उत्तर-1. चैन की नींद सोना – (निश्चिंत सोना)

कुख्यात चोर के पकड़े जाने पर पुलिस चैन की नींद सोई।

2. आँखों से खा जाना – (क्रोधित होना)

परीक्षा में कम अंक आने पर माँ ने पुत्र को ऐसे देखा मानो आँखों से ही खा जाएगी।

3. आँख सेंकने के लिए भी न मिलना – (दुर्लभ होना)
हस्तकला से बनी वस्तुएँ तो आजकल आँख सेंकने के लिए भी नहीं मिलती हैं।
4. मारा-मारा फिरना – (ठोकरें खाना)
बेटे आलीशान घर में रहते हैं और बाप बेचारा मारा-मारा फिरता है।
5. डींगे सुनना – (झूठ-मूठ की तारीफ सुनना)
लाला जी घर में तो भीगी बिल्ली है परंतु बाहर अपनी बहादुरी की डींगें मारते फिरते हैं।

Prepared By
Manisha Khatri
TGT(Hindi)
KV AFS Yelahanka

**Thank
You**

